अध्याय 11

विकास की अवधारणा

रजत आज बड़ा प्रसन्न दिखाई दे रहा है क्योंकि वह आज अपने मित्रों के साथ जयपुर घूमने जा रहा है। जयपुर में उसके बचपन का मित्र रवि भी रहता है जिससे वह बहुत दिनों बाद मिलने वाला है। जयपुर आकर रजत शहर की चकाचौंध देख अवाक् रह गया।

शॉपिंग मॉल

जयपुर की चौड़ी–चौड़ी सुन्दर सड़कें, बिजली की रोशनी से जगमग ऊँची गगनचुम्बी इमारतें, परिवहन हेतु सिटी बसों की उत्तम व्यवस्था, खेलकूद के लिए सवाई मानसिंह स्टेडियम, हवामहल की भव्यता, साँगानेर एयरपोर्ट , सिटी मॉल , मेट्रो ट्रेन आदि को देखकर रजत अचम्भित हो गया। उसके मित्र रवि ने बताया कि वर्ल्ड ट्रेड पार्क को देखने शाम को चलना है।

रजत गहरी सोच में डूब गया, रवि के झिंझोड़ने पर उसने बताया कि उसके गाँव की सड़क तो टूटी–फूटी है, जिसमें बड़े–बड़े गड्डे हैं, बिजली कभी–कभी ही आती है, पानी के लिये नल नहीं लगे हुए हैं, बल्कि कुँओं से खींचकर पानी लाना पड़ता है। शहर जाने हेतु एकमात्र बस है। गाँव के एकमात्र विद्यालय का भवन पुराना व जर्जर है। स्वास्थ्य केन्द्र पर मात्र एक नर्स उपलब्ध है। उसके मन में बार –बार यह प्रश्न कौंध रहा था कि आखिर गाँव व शहर में यह भारी अन्तर क्यों है ?

रवि के पिता, जो कि जयपुर के एक विद्यालय में प्रधानाचार्य है, उन्होंने दोनों को समझाया कि इस अन्तर का कारण विकास है। शहरी क्षेत्रों में विकास तीव्र गति से हुआ है, शहर के नजदीक स्थित गाँवों में भी विकास हुआ है, जबकि दूरदराज के गाँव में विकास की गति धीमी है। विकास के स्तर में यह अन्तर गाँव व शहर के बीच खाईं पैदा कर देता है। यह अन्तर देश के विभिन्न क्षेत्रों, विभिन्न महानगरों , विभिन्न राज्यों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि वैश्विक स्तर पर विभिन्न राष्ट्रों के बीच भी विकास सम्बन्धी अन्तर दिखाई देता है।

आज विश्व के देशों को आर्थिक दृष्टि से दो भागों में बाँटा जाता है– विकसित देश और विकासशील देश। विकसित देशों की श्रेणी में वे देश आते हैं जहाँ आर्थिक विकास तेजी से हुआ है। यहाँ औद्योगिक विकास तीव्रगति से होने के कारण लोगों की आय में वृद्धि हुई है और भौतिक सुख–सुविधाएँ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। इंग्लैण्ड, अमेरिका, स्विट्जरलैण्ड, जापान आदि देश इस श्रेणी में आते हैं।

विकासशील देशों में इसके विपरीत अवस्था दिखाई देती है। इन देशों में जनसंख्या बहुत अधिक है, विकास की गति धीमी है, आवश्यक वस्तुओं का अभाव दिखाई देता है, अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर है और प्रति व्यक्ति आय बहुत कम है। इनमें से अधिकतर देश पहले किसी विकसित देश के अधीन रहे हैं। विदेशी शासन के दौरान हुए शोषण से इन देशों में आर्थिक पिछड़ापन विद्यमान है। अपने पिछड़ेपन से उबरने

के लिये ये देश प्रयत्नशील हैं, इसलिए इन्हें विकासशील देश कहा जाता है। भारत, ब्राजील, इन्डोनेशिया आदि देश इस श्रेणी में आते हैं।

गतिविधि–

अपने शिक्षक की सहायता से विकसित एवं विकासशील देशों के 5–5 नामों की सूची बनाइए।

आर्थिक विकास

विकसित और विकासशील देशों के अन्तर से हम आर्थिक विकास के अर्थ को समझ सकते हैं। परम्परागत धारणा में आर्थिक विकास एक ऐसी स्थिति है जिसमें कुल सकल राष्ट्रीय उत्पाद 5 से 7 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से बढ़ता रहे। इसके साथ ही उत्पादन व रोजगार संरचना में इस प्रकार परिवर्तन हो कि उसमें कृषि का हिस्सा कम हो जाये और विनिर्माण क्षेत्र तथा सेवा क्षेत्र का हिस्सा बढ़ता जाये। अर्थात् कृषि के स्थान पर औद्योगिकीकरण की गति को तेज किया जा सके।

वर्ल्ड ट्रेड पार्क,जयपुर

किन्तु समय के अनुसार आर्थिक विकास की संकल्पना को पुनः परिभाषित किया गया है। विकास की नवीन अवधारणा में आर्थिक विकास का मुख्य उद्देश्य गरीबी, बेरोजगारी और असमानता का निवारण रखा गया है। अतः अब यह माना जाने लगा है कि यदि देश में गरीबी के स्तर में कमी आ रही हो, बेरोजगारी का स्तर कम हो रहा हो तथा आर्थिक असमानताएँ कम हो रही हों, तो निश्चित ही देश का आर्थिक विकास हो रहा है।

यहाँ आर्थिक विकास की भारतीय अवधारणा को समझना भी आवश्यक है। विकास की भारतीय अवधारणा के अनुसार देश में उपलब्ध सभी संसाधनों का आवश्यकतानुसार दोहन करते हुए और राष्ट्रहित में उनको उपयोग में लाते हुए देश की आर्थिक संरचना और प्रौद्योगिकी में आवश्यक परिवर्तन लाना जिससे उत्पादन, आय और रोजगार में वृद्धि हो तथा लोगों को उपयुक्त व उत्तम जीवन स्तर प्रदान किया जा सके। प्रकृति से प्राप्त निःशुल्क संसाधनों का अविवेकपूर्ण और अमर्यादित उपयोग करना राष्ट्रहित में नहीं है। प्रकृति को ईश्वर का अमूल्य उपहार मानकर उससे आवश्यकतानुसार वस्तुएँ प्राप्त कर संयमित उपयोग द्वारा जीवनयापन करते हुए राष्ट्र को वैभव सम्पन्न बनाना ही राष्ट्रहित है।

आर्थिक विकास को सफल बनाने के लिये आज हर देश प्रयास कर रहा है। विश्व के विकसित और विकासशील देशों में आर्थिक विकास की होड़ लगी हुई है। विकासशील देशों में व्याप्त निर्धनता, बेरोजगारी व आर्थिक असमानता को समाप्त करने के लिये आर्थिक विकास आवश्यक भी है। दुनिया से भय, भूख और भेदभाव की समाप्ति और अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा की दृष्टि से भी आर्थिक विकास आधुनिक युग की

सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। आर्थिक विकास का सम्बन्ध पिछड़े हुये देशों से भी है, जहाँ पर साधनों का विकास एवं उपयोग नहीं हुआ है।

विकास के आर्थिक सूचक

किसी राष्ट्र के विकास को मापने के लिए निम्नलिखित तीन आर्थिक सूचक काम में लिए जाते रहे हैं– स्वास्थ्य, शिक्षा एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि। वर्तमान में विकास को 'मानव विकास सूचकांक' द्वारा मापा जाने लगा है। मानव विकास सूचकांक में शिक्षा, जीवन प्रत्याशा एवं व्यक्ति की क्रय शक्ति को प्रमुखता दी जाती है, अर्थात् लम्बा एवं स्वस्थ जीवन, शिक्षा एवं शैक्षिक योग्यताओं में अभिवृद्धि तथा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि किसी भी देश के मानव विकास को दर्शाते हैं।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) सन् 1990 से प्रति वर्ष इन मानव विकास सूचकांकों के आधार पर वार्षिक मानव विकास रिपोर्ट जारी करता है जो वैश्विक स्तर पर विभिन्न देशों की मानवीय विकास की स्थिति को प्रकट करती है।

मानव विकास सूचकांक 2014

मानव विकास सूचकांक वरीयता (Rank)	देश का नाम	मानव विकास सूचकांक मूल्य (Value)
1	नार्वे	0.944
2	ऑस्ट्रेलिया	0.933
3	स्विट्जरलैण्ड	0.917
4	नीदरलैण्ड	0.915
5	संयुक्त राज्य अमेरिका	0.914
135	भारत	0.586

समावेशी विकास

समावेशी विकास में समाज के सभी वर्गों को विशेष कर वंचित, पिछड़े एवं सीमान्त वर्गों को साथ लेकर विकास किये जाने पर बल दिया जाता है। विकास का होना तभी माना जायेगा जब उसका लाभ सभी वर्गों तक समान रूप से पहुँचे। समावेशी विकास में गरीबी की दर को नियंत्रित एवं विकास की गति को तेज कर विकास प्रक्रिया में सभी वर्गों को लाभ पहुँचाने का प्रयास किया जाता है। सरकार की योजनाओं का मुख्य लक्ष्य समावेशी विकास ही होता है।

सतत या धारक विकास

सतत विकास

आर्थिक विकास एक विस्तृत व सतत धारणा है। यह आर्थिक आवश्यकताओं, वस्तुओं, प्रेरणाओं और संस्थाओं में गुणात्मक परिवर्तनों से सम्बन्धित है। सतत विकास से तात्पर्य

विकास की उस प्रक्रिया से है जिस में भावी पीढ़ियों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किया जाता है। सतत विकास को 'धारक विकास' भी कहा जाता है।

सतत विकास की अवधारणा के विकसित होने के पीछे अनेक कारण हैं। आज विकास के परिणामस्वरूप हुए पर्यावरण प्रदूषण ने भी हमें विकास की परिभाषाओं को बदलने पर मजबूर कर दिया है। विकास के लिये प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन ने आज हमारे सामने बड़ी भारी समस्या खड़ी कर दी है। यदि हम अपने राज्य में देखें तो खनिजों व भूमि के लालच में अरावली व वन क्षेत्रों को काफी नुकसान पहुँचाया गया है। परिवहन मार्ग बनाने के नाम पर पर्वतों को काटा जा रहा है जिसका परिणाम हमें घटते खनिज संसाधन और मानसून की अनियमितता के रूप में भुगतना पड़ रहा है।

धरती से अधिक अन्न उपजाने हेतु हमने उसमें रासायनिक खाद एवं कीटनाशकों के रूप में जहर घोल दिया है जिससे कई क्षेत्रों में भूमि बंजर व दूषित हो गई है। इससे भूमि से उत्पन्न खाद्य पदार्थ प्रदूषित हो जाते हैं। उनके उपभोग से मानवीय स्वास्थ्य पर तथा पशुओं पर बुरा असर पड़ता है। वे कई प्रकार के रोगों के शिकार हो जाते हैं।

जल के अंधाधुंध प्रयोग ने कई क्षेत्रों, विशेषकर राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों में भूमिगत जल के घटते स्तर व लवणीय जल जैसी गम्भीर समस्याओं को जन्म दिया है। परिवहन साधनों, रेफ्रीजरेटर एवं एयरकण्डीशनर के अत्यधिक प्रयोग से हानिकारक गैसों के अत्यधिक उत्सर्जन ने वायुमण्डलीय प्रदूषण व ओजोन परत में छेद जैसी मुसीबतें खड़ी कर दी है।

अतः आवश्यकता आज की इस उपभोगवादी संस्कृति पर अंकुश लगाने और संसाधनों के कुशल व अनुकूल दोहन की है ताकि विकास की प्रक्रिया अनवरत चल सके। विकास मानव के लिये खुशहाली व समृद्धि लाये जिसका लाभ वर्तमान ही नहीं भावी पीढ़ियों को भी मिल सके। यही सतत विकास है।

विकासशील देशों के विकास में बाधाएँ

पूँजी की कमी, जनसंख्या की बहुलता, उत्पादन की पिछड़ी हुई तकनीक का प्रयोग, गरीबी का दुश्चक्र, कृषि पर अत्यधिक निर्भरता, आर्थिक असमानता, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का निम्नस्तर तथा परिवहन, संचार एवं मूलभूत संसाधनों का अभाव– ये सब स्थितियाँ विकासशील देशों को विकसित बनने में बड़ी बाधाएँ हैं।

जहाँ तक बात भारत की है तो भारत का अतीत वैभवशाली रहा है। धन–धान्य की प्रचुरता के कारण सम्पन्न एवं समर्थ राष्ट्र के रूप में भारत की प्रतिष्ठा विश्व में रही है। उच्च श्रेणी के वस्त्रों से लेकर लौह–निर्मित वस्तुओं के निर्माण में भारत विश्व विख्यात था।

भारत आज पुनः विश्व में आर्थिक शक्ति के रूप में स्थापित हो रहा है। हमारे इन्जीनियर, डॉक्टर ,चार्टेड अकाउण्टेंट, मुख्य प्रबन्धक, व्यवसायी एवं प्रशासनिक अधिकारी अपनी योग्यता व श्रम से विश्व के अधिकांश देशों में प्रतिष्ठित स्थानों पर कार्यरत हैं। वर्तमान में न केवल भारतीय वस्तुओं की माँग विश्व में बढ़ी है, बल्कि हमारे अन्तरिक्ष अनुसंधान, प्रौद्योगिकी एवं विशेषज्ञों की माँग बढ़ना भी विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ने का द्योतक है। आवश्यकता आज इस बात की है कि विश्व की आर्थिक शक्ति के रूप में भारत पुनः प्रतिस्थापित हो और 'सोने की चिड़िया' की पहले जैसी स्थिति प्राप्त हो।

शब्दावली

प्रति व्यक्ति आय – राष्ट्रीय आय में देश की जनसंख्या का भाग देकर प्राप्त आय।

जीवन प्रत्याशा – किसी देश के नागरिकों की औसत आयु।

अभ्यास प्रश्न

1. सही विकल्प को चुनिए –

   (i) निम्नलिखित में से विकसित देश है–

   (अ) भारत (ब) ब्राजील

   (स) इण्डोनेशिया (द) अमेरिका ( )

   (ii) भावी पीढ़ियों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कहलाता है–

   (अ) मानव विकास (ब) आर्थिक विकास

   (स) औद्योगिक विकास (द) सतत विकास ( )

2. किन्हीं तीन विकसित देशों के नाम बताइए।
3. विकासशील देशों के विकास में कौनसी बाधाएँ हैं ?
4. मानव विकास सूचकांक से क्या तात्पर्य है ?
5. आर्थिक विकास की नवीन अवधारणा को समझाइए।
6. समावेशी विकास से आप क्या समझते हैं ?
7. विकसित एवं विकासशील देशों का आर्थिक दृष्टि से अन्तर समझाइए।
8. आधुनिक विकास के परिणामस्वरूप हुए पर्यावरण प्रदूषण पर प्रकाश डालिए।